एमपी स्टेट को–ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन

बेस्ट प्रेक्टिसेज

1. जीपीएस सिस्टम

दुग्ध संघों द्वारा दुग्ध संकलन कार्य में लगे हुए टैंकरों में दूध के इनलेट आउटलेट तथा स्वयं के टैंकरों के फ्यूल टैंकरों में सेंसर स्थापित करवाए जा रहे हैं । इससे दुग्ध संकलन, परिवहन कार्य में लगे हुए टैंकरों की परिचालन गतिविधियों का वेब आधारित सॉफ्टवेयर के माध्यम से अनुश्रवण किया जा सकेगा । दुग्ध संघ में कंट्रोल रूम निर्मित किए गए हैं जिनमें प्रशिक्षित स्टाफ तैनात किया गया है जो टैंकरों के परिचालन पर लगातार नजर रखता है । सेंसरों के माध्यम से टैंकरों के इनलेट आउटलेट तथा फ्यूल टैंक के ढक्कन खुलने के समय की सॉफ्टवेयर में रिकॉर्डिंग की जाती है । इसी प्रकार टैंकरों के खड़े होने के स्थान तथा रूकने की कुल अवधि भी सॉफ्टवेयर में दर्ज की जाती है । उपरोक्त प्रक्रियाओं पर विभिन्न अधिकारियों को एसएमएस के माध्यम से सूचित भी किया जा रहा है ।

वर्तमान में भोपाल दुग्ध संघ में 70, इंदौर में 32, उज्जैन में 20, ग्वालियर में 8 तथा जबलपुर में 10 टैंकरों में जीपीएस सिस्टम स्थापित कर लिया गया है । भोपाल तथा इंदौर दुग्ध संघ में पृथक से कंट्रोल रूम भी बनाए गए हैं जबकि शेष दुग्ध संघों में कंट्रोल रूम निर्माण की कार्यवाही प्रगति पर है । इन दुग्ध संघों में संयंत्र संचालन शाखा के अन्य कंप्यूटरों के माध्यम से टैंकरों का अनुश्रवण किया जा रहा है ।

जीपीएस सिस्टम के क्रियान्वयन से दूध की गुणवत्ता के साथ–साथ टैंकरों से हो रही चोरी तथा अपमिश्रण पर भी अंकुश लगाया जा सकेगा । टैंकरों के अनावश्यक रूप से इधर–उधर खड़े होकर समय व्यतीत करने पर रोक लगाई जा सकेगी तथा ग्रामीण क्षेत्रों से डेयरी संयंत्र तक एक निश्चित समयावधि में गुणवत्तापूर्ण दूध की पहुंच सुनिश्चित की जा सकेगी । इसके अतिरिक्त फ्यूल टैंकों पर सेंसर लगे होने से डीजल की चोरी रोकी जा सकेगी तथा दुग्ध संघों द्वारा प्रति लीटर दुग्ध संकलन परिवहन को भी नियंत्रित करने में सहयोग प्राप्त होगा ।

2. भोपाल डेयरी संयंत्र का ऑटोमेशन

भोपाल दुग्ध संयंत्र की दुग्ध संसाधन प्रक्रिया का पूर्ण रूप से आटोमेशन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत मिल्क रिसेप्शन, चिलर, संयंत्र के समस्त उपकरण पाइप्स,वाल्व्स, पाश्चुराईजर, सीआईपी (Cleaning in process) सिस्टम तथा मिल्क डिस्पेच सेक्शन का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। संपूर्ण प्रणाली में पूरी पाईप लाईन की उच्च गुणवत्ता के स्वच्छता मानकों के परिपालन में पुनः संरचना एवं पुर्नस्थापना की गई है । पाश्चुराईजर तथा संपूर्ण संसाधन प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार न्यूमेटिक वॉल तथा उपकरण स्थापित किए गए हैं । विभिन्न प्रकार के दूध का निर्माण तथा उनकी डिस्पेच प्रक्रिया केन्द्रीय नियंत्रण कक्ष के माध्यम से संचालित की जाएगी । सम्पूर्ण संयंत्र संचालन गतिविधियों को कम्प्यूटरीकृत प्रणाली के माध्यम से नियंत्रित किया जाएगा ।

उपरोक्त प्रणाली के क्रियान्वयन से उत्पादन को न्यूनतम समय में पूर्णतया त्रुटिमुक्त करते हुए उत्पादन प्रक्रिया को योजनाबद्ध एवं समयबद्ध कार्यक्रम के अनुरूप पूर्ण किया जा सकेगा। इस प्रकार दूध का संसाधन पूर्णतया आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो सकेगा । दूध की हेण्डलिंग, पानी, बिजली, रेफ्रीजरेशन, भाप तथा धुलाई प्रक्रिया में होने वाली हानि को कंट्रोल सिस्टम द्वारा नियंत्रित किया जाएगा । इस प्रणाली से संसाधन प्रक्रिया के दौरान दूध की हानि को भी कम किया जा सकेगा । संपूर्ण प्रक्रिया का आधुनिकीकरण होने से उपकरणों का समयबद्ध रख–रखाव हो सकेगा जिससे उपकरणों की टूट–फूट तथा संसाधन हानि में कमी लाई जा सकेगी । साथ ही त्रुटियों का तत्काल पता लगने से समय की बचत होगी । आधुनिकीकरण के जरिये न्यूनतम अमले की सेवाओं के माध्यम से बेहतर प्रबंधन संभव होगा तथा समस्त संचालन में अनुत्पादक व्यय को नियंत्रित कर संयंत्र उत्पादकता में वृद्धि के साथ साथ संयंत्र क्षमता का पूर्ण उपयोग किया जा सकेगा । सम्पूर्ण संचालन प्रक्रिया में प्रत्येक स्तर पर संभावित त्रुटियों को दूर करने तथा दूध के प्रसंस्करण की हानि में कमी आ सकेगी । इस आधुनिकीकरण के माध्यम से संयंत्र पर लागू वैधानिक मानकों यथा स्वास्थ्य सुरक्षा अधिनियम तथा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली यथा–ISO तथा HACCP का कडाई से पालन सुनिश्चित किया जा सकेगा।

3. बुंदेलखंड विशेष डेयरी परियोजना

प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र की अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से कृषि पर ही आधारित है। क्षेत्र में भूमि की उर्वरा शक्ति कम होने, कम उत्पादकता, सिंचाई सुविधाओं की कमी, कृषि में आधुनिक तकनीकों का उपयोग न होने तथा भूमि के असमान वितरण के कारण क्षेत्र में कृषि उत्पादन अपेक्षानुरूप नहीं है।

विगत कुछ वर्षों के दौरान असामान्य वर्षा से क्षेत्र में सूखे की स्थिति निर्मित हुई जिससे कृषि उत्पादन तो प्रभावित हुआ ही, पशुपालन के लिये आवश्यक हरे चारे की उपलब्धता में भी कमी आई। इस प्रकार कृषि हेतु उपयुक्त परिस्थितियों के न होने तथा बिचौलियों के शोषण के कारण क्षेत्र में दुग्ध उत्पादन गतिविधियां नगण्य थीं।

केन्द्र शासन द्वारा बुंदेलखंड क्षेत्र में डेयरी विकास एवं विस्तार गतिविधियों के लिये विशेष पैकेज के तहत रू. 21.30 करोड़ का परियोजना प्रस्ताव स्वीकृत किया गया । इससे वर्ष 2010 में बुंदेलखंड क्षेत्र के जिलों सागर, दमोह, छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ तथा दतिया में बुंदेलखंड विशेष डेयरी परियोजना का क्रियान्वयन प्रारंभ किया गया।

परियोजना अंतर्गत क्षेत्र के लगभग 1,000 ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के पश्चात् दूध की उपलब्धता के आधार पर ग्रामों का चयन किया गया तथा दुग्ध मार्ग चिन्हित किए गए। दुग्ध संघों के अधिकारियों/ कर्मचारियों के दल ने ग्रामों में विस्तार बैठकें कर कृषकों को सहकारी डेयरी कार्यक्रम के लाभ जैसेः द्वार पर बाजार की उपलब्धता, दूध की उचित कीमत (रू. 24 से 28 प्रति लीटर), उचित मूल्य पर संतुलित पशु आहार, पूर्ण पारदर्शी इलेक्ट्रॉनिक संकलन प्रणाली इत्यादि के संबंध में जानकारी दी गई तथा ग्राम स्तरीय प्राथमिक दुग्ध सहकारी समितियों का गठन किया गया। विस्तार बैठकों में ग्रामीण महिलाओं की उत्साहजनक उपस्थिति रही ।

दुग्ध सहकारी समितियों के सदस्य पशुपालकों को भोपाल स्थित प्रशिक्षण केन्द्र में तकनीकी पशु प्रबंधन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया । इन सदस्यों को भोपाल दुग्ध संयंत्र, पशु आहार संयंत्र पचामा तथा बुल मदर फार्म का भ्रमण करवाया गया । चयनित सदस्यों को गुजरात स्थित दुग्ध संयंत्रों तथा दुग्ध सहकारी समितियों का भ्रमण भी करवाया गया । दुग्ध उत्पादकों के पशुओं को कृत्रिम गर्भाधान सुविधा उपलब्ध करवाने तथा प्रथमोपचार हेतु कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों की स्थापना भी की गई। दुग्ध सहकारी समितियों से दुग्ध संयंत्रों की दूरी अधिक होने के कारण दुग्ध शीतलीकरण हेतु बल्क मिल्क कूलर स्थापित किए गए ।

दुग्ध सहकारी समितियों में दूध की गुणवत्ता तथा नाप में पूर्ण पारदर्शिता हेतु परियोजना मद से 90 प्रतिशत अनुदान पर स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण स्थापित किये गये। दुग्ध संघों द्वारा समिति सदस्यों को विभिन्न सुविधाएं यथा अनुदान पर पशु आहार, यूरिया उपचारित भूसा, बरसीम तथा जई के मिनीकिट, चॉफ कटर, वैज्ञानिक आधार पर पशु प्रबंधन एवं हरा चारा उत्पादन का प्रशिक्षण, पशुओं के उपचार हेतु डीवर्मिंग एवं टीकाकरण सुविधाएं प्रदाय की गईं।

डेयरी गतिविधियों के कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। दुग्ध संघों की दुग्ध क्रय दर बाजार से अधिक होने, पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होने तथा पारदर्शी संकलन प्रणाली होने के कारण दुग्ध संकलन में भी लगातार वृद्धि हो रही है तथा कृषकों का रूझान

पशुपालन की ओर बढ़ रहा है । ग्रामवासियों द्वारा दुधारू पशु की स्थानीय गौवंशीय नस्ल ''केनकथा'' का अच्छी तरह पालन किया जा रहा है। डेयरी विकास एवं संचालन योजना के आचार्य विद्यासागर घटक अंतर्गत उन्नत पशुओं के क्रय हेतु डीपीआईपी के सहयोग से महिला हितग्राहियों को दुधारू पशु क्रय हेतु वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराई गई है। दुग्ध उत्पादकों द्वारा स्व प्रेरणा से स्वयं के संसाधनों से भी पशु क्रय किए गए है।

बुंदेलखंड़ क्षेत्र में संकलित दूध के संसाधन हेतु सागर में रू. 5.00 करोड़ की लागत से डेयरी संयंत्र की स्थापना की गई है । इस डेयरी संयंत्र में दूध का संसाधन तथा पैकिंग कर लगभग 30,000 लीटर दूध बुंदेलखंड़ क्षेत्र में ही विक्रय किया जाता है। शेष दूध ग्वालियर, जबलपुर तथा भोपाल दुग्ध संघों के मुख्य डेयरी संयंत्रों में स्थानांतरित होता है । यह दूध भोपाल तथा ग्वालियर नगर में भी विक्रय किया जाता है तथा इससे विभिन्न दुग्ध उत्पाद जैसेः श्रीखंड, लस्सी, पेडा, मट्ठा, मीठा सुगंधित दूध इत्यादि निर्मित किये जाते हैं ।

वर्तमान में दतिया एवं टीकमग़ढ़ जिलों में ग्वालियर सहकारी दुग्ध संघ, दमोह (तेंदूखेड़ा) एवं पन्ना जिलों में जबलपुर सहकारी दुग्ध संघ तथा सागर, छतरपुर एवं दमोह (हटा) जिले में भोपाल दुग्ध संघ के माध्यम से परियोजना का कियान्वयन किया जा रहा है। वर्ष 2014–15 तक दुग्ध संघों द्वारा बुंदेलखंड़ क्षेत्र बुंदेलखंड क्षेत्र में 561 दुग्ध सहकारी समितियॉ गठित की गई । इनमें 21,611 सदस्य हैं जिनमें 9,036 महिलायें हैं । वर्ष 2014–15 में 51,805 कि.ग्रा. प्रतिदिन दूध संकलित किया गया । माह सितंबर 2014 के दौरान परियोजना अंतर्गत लगभग 90,000 कि.ग्रा. प्रतिदिन दूध संकलित किया गया। दूध के क्रय मूल्य के रूप में वर्षान्त तक रू. 124.90 करोड़ की राशि का भुगतान किया गया । यह राशि शहरी अर्थव्यवस्था से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थानांतरित हुई है।

सागर में 100 मे.टन प्रतिदिन क्षमता के संतुलित पशु आहार संयंत्र की स्थापना का कार्य भी पूर्ण हो चुका है । वर्तमान में संयंत्र में ट्रायल रन चल रहा है तथा नवंबर 2015 से उत्पादन प्रारंभ होना अपेक्षित है । इस संयंत्र के प्रारंभ होने से बुंदेलखंड के पशुपालकों को उचित मूल्य पर मांग अनुसार संतुलित पशु आहार प्राप्त हो सकेगा ।

सहकारी डेयरी गतिविधियां प्रारंभ होने से ग्राम में ही रोजगार के अवसर निर्मित हुए हैं तथा ग्रामवासियों को वर्ष भर निरंतर आय के साधन उपलब्ध हुए हैं। 4 लीटर प्रतिदिन दुग्ध उत्पादन करने वाले पशुपालक जिन्हें पूर्व में दुग्ध विक्रय से रू. 60.00 प्रतिदिन प्राप्त हो रहे थे अब रू. 100.00 प्राप्त हो रहे हैं। दूध विक्रय से पर्याप्त आय प्राप्त होने के कारण ग्राम वासियों की पशुपालन में रूचि जागृत हुई है एवं दैनिक व्ययों का निर्वहन आसान हो गया है। इससे ग्रामवासी अत्यंत उत्साहित हैं तथा पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय को अपना मुख्य व्यवसाय बनाते हुए डेयरी गतिविधियों को और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

****